यहाँ एक नदी बहती थी ...

मैं यहाँ की ओर बहती थी
इस रास्ते की ओर...
कई सपने देखकर
आगे बह रही थी ।

मुझे दो किनारे थे
मेरे छाती से लगाये थे ।
करते थे आलिंगन मुझे
मंद पवन की बाहों से ।

पुलकित होकर उछल कूदकर
बहती थी मैं .... ।
पेड पौधों ने रास्ता दिखाया
जानवर मेरी साथी बनी ।

अविचल होकर पहुँची मैं
मानव से साथी बनने
हाँ ... लेकिन कलंक किया
मेरा तन मन ।

अपना सर्वस्व त्यागकर
अपनी छाती चीरकर
अपनी खून पानी बहाकर
पहुँची मानव के पास ।

दर्द है आज मुझे ...
मानव की इन क्रीडाओं पर
बडी दर्द है आज मुझे
मानव की क्रूरता पर... ।

कितने सालों से मैं
सबका सहन किया...
रोता मन ही मन
किससे न कहा अपना दुख ।

मैं दुबली हो गयी हूँ आज
मैली हो गयी हूँ ... आज,
मेरी हड्डी हूँ आज मैं
कूडा कचरा सब झेलकर।

मैं सूख रहा हूँ आज
प्यास बुझा न सका मुझे,
मृत्युशय्या में पडकर
रो रही हूँ ... मैं।

कौन बचेगा मुझे
कौन सुनेगा मेरी पुकार,
मेरी पुकार पर व्यंग्य है
मैं केवल नदी हूँ न ... ?

हाँ .. मुझे मालूम है
बेवकूफ हैं ये मानव
बैठता हुआ डाल काटते हैं वे
अपना गड्ढा खोजते हैं वे।

कहते हैं वे .. विज्ञान में अँचे
तो मूर्ख हैं ये वास्तव में,
तिलक नहीं है उन्हें
ज़रा भी विवेक नहीं ।

मेरे बिना कैसे जियें वे
नयी पीढी कैसे पढें मुझे,
नानी कहानी सुनायेंगे..
ऐसी एक नदी थी ।

नयी पीढी मुझे पढें
पाठ पुस्तक के पन्नों से,
नयी पीढी मुझे पढें
अन्तर्जाल के चित्रों से ।

एक दिन प्यास से
चिल्लायेंगे तुम भी...
एक बूँद पानी केलिए
झगडेंगे तुम भी ... ।

तुम क्या याद करोगे मुझे
ऐसी एक नदी थी...
स्वच्छ सुन्दर शांत
पवित्र एक नदी थी।

लिखेगा मेरा नाम
सुनहरे अक्षरों में..
लिखेगा स्थान-स्थान पर
यहाँ एक नदी बहती थी।